लोकविद्या की किताब

स्मारिका

लोकविद्या जन आन्दोलन

पहला अधिवेशन

वाराणसी

12-14 नवम्बर 2011

विद्या आश्रम
सारनाथ, वाराणसी–221007

ykdfo|k vkSj lkekftd ifjorZu

euq"; dk thou fu/kkZfjr djus esa fo|k dh Hkwfedk 'kk;n gesa'kk gh lcls vf/kd jgh gS] /keZ vkSj jkT; ls Hkh vf/kdA fo|k esa euq"; dk vk/kkj gksrk gS] mldh igpku gksrh gSA fo|k gh euq"; dks eqfDr dk ekxZ nsrh gS vkSj blh ds tfj;s og viuh thfodk Hkh pykrk gSA lekt dh xfr] ykxksa ds vkilh lEcU/k vkSj muesa cnyko ds vk/kkj Hkh euq"; dh fo|k esa gksrs gSaA vU;k; ds f[kykQ la?k"kZ vkSj 'kks"k.k ds ifjorZu rFkk lkekftd ifjorZu dh psruk lHkh dks fo|k esa viuk vk/kkj <wa<uk iM+rk gSA ,d okD; esa dgsa rks fo|k esa gh euq"; v©j lekt ds fuekZ.k v©j iqufuekZ.k dk vk/kkj g¨rk gSA

vxj ykxksa ds eu dk vkSj lcds fy;s U;k; dk lekt cuuk gS rks mls vke ykxksa dh lfØ;rk ij gh vk/kkfjr gksuk gksxk vkSj bl lfØ;rk dk vk/kkj mudh viuh fo|k esa gh gks ldrk gSA fdlkuksa] dkjhxjksa] NksVs&NksVs nqdkunkjksa] efgykvksa vkSj vkfnokfl;ksa ds ikl tks fo|k gS mls ykdfo|k dgrs gSaA ykdfo|k ds vk/kkj ij [kM+h gbZ jktuhfr vkt rd dh lcls lkQ jktuhfr gksxhA /keZ vkSj iwath ds cy ij [kM+h jktuhfr blds lkeus fVd ugha ldsxhA ykdfo|k esa tekus dh vkLFkk tkx`r djuk vkSj ykdfo|k/kkjd lekt esa viuh fo|k dh vlhe 'kfDr ds izfr fo'okl iSnk djuk Økfrdkjh lkekftd ifjorZu dh 'krZ gSA

लोकविद्या की किताब

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
•	परिचय	3
•	लोकविद्या जन आन्दोलन, प्रथम अधिवेशन आयोजन समिति	5
•	लोकविद्या जन आन्दोलन, प्रथम अधिवेशन तैयारी समूह	6
•	लोकविद्या चिन्तन	7

1. लोकविद्याधर समाज
2. जन आन्दोलन
3. संगठित ज्ञान
4. विश्वविद्यालय
5. भाषा
6. कला
7. संचार माध्यम
8. प्रौद्योगिकी
9. वित्तीय पूँजी
10. अर्थनीति
11. राजनीति
12. संस्कृति
13. धर्म
14. इतिहास
15. परम्परा
16. समाज
17. लोकहित
18. सामान्य जीवन
19. प्रकृति
20. साइंस
21. इन्टरनेट
22. वैश्वीकरण
23. दर्शन
24. परिवर्तन
25. अन्त में

•	लोकविद्या जन आन्दोलन घोषणा	28
•	लोकविद्या साहित्य सूची	32

लोकविद्या जन आन्दोलन पुस्तकमाला-4

पुस्तिका : लोकविद्या की किताब

लोकविद्या जन आन्दोलन, प्रथम अधिवेशन की स्मारिका
नवम्बर 2011

सहयोग राशि : रु. 10.00

प्रकाशक :

लोकविद्या जन आन्दोलन के लिए विद्या आश्रम की ओर से
डॉ. चित्रा सहस्रबुद्धे, समन्वयक, विद्या आश्रम द्वारा प्रकाशित।
पता : विद्या आश्रम, सा. 10/82 ए, अशोक मार्ग,
सारनाथ, वाराणसी-221007
फोन : 0542-2595120, 09839275124
ई-मेल : vidyaashram@gmail.com
वेबसाइट : vidyaashram.org
ब्लाग : lokavidyajanandolan.blogspot.com
lokavidyapanchayat.blogspot.com

मुद्रक :

सत्तनाम प्रिंटर्स
एस-1/208 के-1, नईबस्ती
पाण्डेयपुर, वाराणसी-221002

परिचय

लोकविद्या जन आंदोलन के इस प्रथम अधिवेशन की यह स्मारिका एक लोकविद्या पुस्तक है। लोकविद्या किसानों, आदिवासियों, कारीगरों, छोटे-छोटे दुकानदारों और तरह-तरह का काम करने वाले करोड़ों लोगों और उनके परिवारों की प्राणवायु है। इसमें उनकी शक्ति का आधार होता है। यह कोई बचा-खुचा पारम्परिक ज्ञान नहीं है, बल्कि समाज में स्थित वह ज्ञान प्रवाह है जो सतत् लोगों के अनुभवों, प्रयोगों और उनकी तर्क बुद्धि से नवीनीकृत होता रहता है। यह अधिवेशन इसी लोकविद्या की परिवर्तनकारी शक्ति के दर्शन का स्थान है। जिन्दगी के विभिन्न आयामों के साथ लोकविद्या का क्या रिश्ता है, इसकी ओर ध्यान खींचने का यह स्मारिका एक प्रयास है। जिन्दगी के आयाम तो अनगिनत होते हैं और कटघरों व शीर्षकों में बंटे नहीं होते। किन्तु समय और स्थान के अनुरूप हमने कुछ आयाम चर्चा के लिये चुने हैं। आशा है कि इस पुस्तक से लोकविद्या का दावा पेश करने का आधार मिलेगा।

मनुष्य के ज्ञान की कोई शर्त नहीं होती। अगर आप चाहें तो ज्ञान की शर्त जीवन है और जीवन की शर्त ज्ञान। यही बात इस पुस्तिका में प्रस्तुत करने का प्रयास है कि किस तरह सामान्य जीवन लोकविद्या का घर है और किस तरह लोकविद्या सतत् सामान्य जीवन के निर्माण और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया की गतिदायक शक्ति है। आधुनिक जीवन के अनेक तत्त्व सामान्य जीवन को खण्डित करते रहते हैं। जैसे पूंजी की अर्थव्यवस्थाएं, केन्द्रीकृत सत्ताएं, साइंस और प्रौद्योगिकी, विश्वविद्यालय का ज्ञान का संगठन, आधुनिक शिक्षा, संगठित धर्म, मेडिकल की अंग्रेजी चिकित्सा इत्यादि मनुष्य को अपना स्वाभाविक जीवन नहीं जीने देते, समाज में गैर-बराबरी बढ़ाते हैं, अपसंस्कृति का फैलाव करते हैं और लोकविद्या के सहारे जिनका जीवन चलता है,

यानि लोकविद्याधर समाज की ज़िन्दगी तबाह करते हैं। यह अधिवेशन लोकविद्याधर समाज के ज्ञान आंदोलन की शुरुआत है। आशा है कि यह पुस्तिका पाठकों को एक दिशाबोध कराने का उद्देश्य पूरा कर सकेगी।

'लोकविद्या' के नाम से विचार और कार्य की शुरूआत 1995 से हुई। 1998 में वाराणसी में आयोजित लोकविद्या महाधिवेशन लोकविद्या के नाम से होने वाला पहला सार्वजनिक कार्य था। लोकविद्या की प्रतिष्ठा के उद्देश्य से आयोजित इस महाधिवेशन में लोकविद्या और समाज से सम्बन्धित तमाम विषयों पर वार्ता के लिये देश भर से लगभग 1500 प्रतिभागियों ने पांच दिन तक अपनी हिस्सेदारी की। किसानों, कारीगरों और महिलाओं के सम्मेलनों के मार्फत उनके अपने ज्ञान के दावे पेश किये गये। इसके बाद लोकविद्या प्रतिष्ठा से जुड़े कार्य 'लोकविद्या संवाद' के प्रकाशन के इर्दगिर्द संगठित होते रहे। फिर 2005 में इसी कार्य के लिये विद्या आश्रम बनाया गया, जिसने समाज में ज्ञान पर संवाद चलाकर, प्रकाशनों के माध्यम से और लोकविद्याधर समाज के संघर्षों से जुड़कर लोकविद्या जन आन्दोलन के विचार और संगठन का व्यापक फलक तैयार किया। विद्या आश्रम को बनाने और शुरू से लोकविद्या विचार व कार्य को आगे बढ़ाने के काम का संदर्भ किसान आन्दोलन में रहा है। जिस कार्यकर्ता समूह ने यह कार्य किया है वह 1980 से किसान आन्दोलन में सक्रिय रहा है तथा कारीगर, आदिवासी, पटरी के दुकानदार व महिलाओं के संगठनों से जुड़ा रहा है।

अब लगभग 20 वर्षों से दुनियाभर में एक नये किस्म के परिवर्तन का दौर चल रहा है। सूचना उद्योग का विकास, निजीकरण, बाजार, मीडिया और मनोरंजन, जैविक खेती, शहरों का पुनर्संगठन, वैश्वीकरण, अमेरिका की दादागिरी, इत्यादि वे बिन्दु हैं जिनके मार्फत इस परिवर्तन को समझा जा सकता है। ज्ञान की एक नई शब्दावली प्रचलित हो गई

है और शोषण के नये तरीके और पैमाने अस्तित्व में आये हैं। लोकविद्याधर समाज बढ़े हुए शोषण और विस्थापन का शिकार हुआ है लेकिन अब इस बात से कोई इनकार नही कर सकता कि उसके पास मूल्यवान ज्ञान होता है। किसान, कारीगर, आदिवासी, छोटे दुकानदार, महिलायें, स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता, मछुआरे और तमाम तरह का मरम्मत और निर्माण का काम करने वाले अपने ज्ञान के बल पर अपनी और तमाम और लोगों की ज़िन्दगी चलाते हैं। अब समय आ गया है कि वे अपने इस ज्ञान, यानि लोकविद्या, के बल पर एक बराबरी के समाज का दावा पेश करें। लोकविद्या जन आन्दोलन का यह अधिवेशन इसी दावे को पेश करने की शुरूआत है।

•

लोकविद्या जन आंदोलन पहला अधिवेशन

आयोजन समिति

1.	चित्रा सहस्रबुद्धे, संयोजक	वाराणसी
2.	प्रेमलता सिंह	वाराणसी
3.	दिलीप कुमार 'दिली'	वाराणसी
4.	लक्ष्मण प्रसाद मौर्य	वाराणसी
5.	मो. अहमद	वाराणसी
6.	एहसान अली	वाराणसी
7.	जगदीश सिंह यादव	चन्दौली
8.	अवधेश द्विवेदी	सिंगरौली
9.	रविशेखर	लखनऊ
10.	संजीव कीर्तने	इंदौर
11.	गिरीश सहस्रबुद्धे	नागपुर
12.	बी. कृष्णराजुलु	हैदराबाद
13.	मोहन राव	चिराला

लोकविद्या जन आंदोलन पहला अधिवेशन
तैयारी समूह

1.	चित्रा सहस्रबुद्धे	वाराणसी	24.	रमेश पंकज	मुजफ्फरपुर
2.	प्रेमलता सिंह	वाराणसी	25.	अजय कुमार	वैशाली
3.	दिलीप कुमार 'दिली'	वाराणसी	26.	दिलीप कुमार	देवघर
4.	लक्ष्मण प्रसाद मौर्य	वाराणसी	27.	अरूण आनंद	हजारीबाग
5.	कृष्णकुमार	वाराणसी	28.	अशोक चट्टोपाध्याय	कोलकाता
6.	बबलू कुमार	वाराणसी	29.	अवधेश द्विवेदी	सिंगरौली
7.	नंदलाल	वाराणसी	30.	संजीव कीर्तने	इन्दौर
8.	फिरोज खान	वाराणसी	31.	अनिल त्रिवेदी	इन्दौर
9.	मो. अलीम	वाराणसी	32.	गिरीश सहस्रबुद्धे	नागपुर
10.	एहसान अली	वाराणसी	33.	विजय जावंधिया	वर्धा
11.	मो. अहमद	वाराणसी	34.	के. के. सुरेन्द्रन	पुणे
12.	प्रवाल कुमार सिंह	वाराणसी	35.	बी. कृष्णराजुलु	हैदराबाद
13.	सुनील सहस्रबुद्धे	वाराणसी	36.	ललित कुमार कौल	हैदराबाद
14.	जगदीश सिंह यादव	चन्दौली	37.	नारायण राव	हैदराबाद
15.	रविशेखर	लखनऊ	38.	अभिजित मित्रा	हैदराबाद
16.	एकता सिंह	लखनऊ	39.	नरेश कुमार शर्मा	हैदराबाद
17.	गुंजन सिंह	सोनभद्र	40.	मोहन राव	चिराला
18.	बाबूलाल मानव	गाजीपुर	41.	जे. के. सुरेश	बंगलुरू
19.	राजनाथ सिंह यादव	जौनपुर	42.	सिवराम कृष्णन	बंगलुरू
20.	प्रह्लाद पटेल	मिर्जापुर	43.	अविनाश झा	दिल्ली
21.	सिद्धनाथ सिंह	मिर्जापुर	44.	अमित बसोले	अमेरिका
22.	रवीन्द्र कुमार पाठक	गया	45.	हन्ना वर्नर	जर्मनी
23.	विजय कुमार	मधुबनी	46.	जिगी रोजेरो	इटली

●

लोकविद्या चिंतन

1. लोकविद्याधर समाज

- लोकविद्याधर समाज उन लोगों से बनता है जो लोकविद्या के बल पर अपना परिवार, समाज, दर्शन, सब कुछ व्यवस्थित करते हैं।
- किसान, कारीगर, आदिवासी, छोटे-छोटे दुकानदार, समाज के स्वास्थ्य कार्यकर्ता, मछुआरे और तरह-तरह का मरम्मत व निर्माण का काम करने वाले तथा इन सबके घरों की महिलाएं सभी मिलकर लोकविद्याधर समाज बनाते हैं।
- लोकविद्याधर समाज लगभग पूरा उन लोगों से बना है जो कभी कॉलेज या विश्वविद्यालय नहीं गये हैं।
- पूरा का पूरा लोकविद्याधर समाज गरीबी, उत्पीड़न, शोषण और सरकारी उदासीनता का शिकार है।
- लोकविद्या इस समाज का वह गुण है जो इससे छीना नहीं जा सकता। लोकविद्या में ही इसकी शक्ति है और उद्धार का आधार भी।

2. जन आन्दोलन

- लोकविद्याधर समाज के विभिन्न घटकों के आन्दोलन जन आन्दोलन माने जाते हैं।
- विस्थापन विरोध के सभी संघर्ष लोकविद्या के आधार पर जीवनयापन के अधिकार के संघर्ष हैं। किसान और आदिवासी का जमीन के लिए लड़ना, कारीगर और छोटे

दुकानदारों के बाजार के लिए किये जा रहे संघर्ष, मछुआरों के मछली पकड़ने के हक और बड़ी मशीनों से मछली मारने के विरोध के संघर्ष, स्थानीय स्वास्थ्य परम्पराओं में काम करने वालों के चिकित्सकीय अधिकारों के संघर्ष, ये सभी और इनसे मिलते-जुलते अन्य सभी संघर्ष इसी श्रेणी में आते हैं।

- किसानों के कृषि उत्पाद के वाजिब दाम के आन्दोलन, लोकविद्या का शोषण न हो इसके आन्दोलन हैं।
- जल, जंगल और जमीन के अधिकार के आन्दोलन लोकविद्या के बल पर जीने और समाज संचालित करने के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार के आन्दोलन हैं।
- हर परिवार में कम से कम एक नौकरी की मांग का आंदोलन लोकविद्या के बल पर खुशहाली का रास्ता खोलने का आन्दोलन है।

3. संगठित ज्ञान

- आज की दुनिया के ज्ञान के संगठन ने पूरे समाज को दो भागों में विभाजित कर दिया है। एक तरफ लोकविद्याधर समाज है और दूसरी तरफ आधुनिक शिक्षा प्राप्त समाज।
- ज्ञान के नये संगठन में साइंस और कम्प्यूटर की अहम् भूमिका है। विश्वविद्यालय और इन्टरनेट ज्ञान के ऐसे संगठन के स्थान हैं। दोनों ही ज्ञान को समाज से दूर ले जाते हैं।

- कम्प्यूटर लोकविद्या में उपलब्ध जानकारियों को संगठित कर पाता है, लेकिन लोकविद्या के मूल्यों, समाज से उसके रिश्ते और लोकविद्याधर समाज की तर्क पद्धति से उसका कोई रिश्ता नहीं बन पाता।
- कम्प्यूटर में लोकविद्या की जानकारियों का संगठन लोकविद्या के शोषण का एक नया तरीका है।
- लोकविद्या समाज में बसती है और उसका संगठन समाज के संगठन से मेल खाता है। जितना बिखराव समाज में होगा उतना ही बिखराव लोकविद्या में भी दिखाई देगा। समाज का पुनर्संगठन और लोकविद्या के नये संगठन की प्रक्रियाएं एक दूसरे के साथ चलने वाली और एक दूसरे की पूरक ही हो सकती है।

4. विश्वविद्यालय

- विश्वविद्यालय लोकविद्या के तिरस्कार के स्थान हैं।
- जब से विश्वविद्यालय बने हैं ज्ञान और व्यवसाय के बीच सम्बन्ध पुख्ता होते चले गये। विज्ञान, कला, साहित्य सब कुछ व्यावसायिक उद्देश्यों से बांध दिये गये। लोकविद्या के लक्ष्य व्यावसायिक नहीं होते।
- विश्वविद्यालय ने समाज, मानविकी, कला सभी को साइंस की तर्ज पर ढाल दिया और उनके मूल स्वभाव को कुण्ठित कर दिया।
- ज्यादा से ज्यादा विश्वविद्यालय बनाकर भी समाज के केवल एक छोटे से हिस्से को ही उसमें दाखिला दिया जा

सकता है। सामान्य तौर पर ये पहले से पढ़े-लिखे परिवारों और पैसे वाले परिवारों के लड़के-लड़कियां होते हैं।

- विश्वविद्यालय की अवधारणा में यह मान्यता निहित है कि विश्वविद्यालय विशाल जन समुदाय के अज्ञान रूपी सागर में ज्ञान का एक टापू है।
- जब तक विश्वविद्यालय की दीवारें गिरती नहीं हैं, लोकविद्या का संसार तिरस्कृत ही रहेगा।

5. भाषा

- लोकविद्या की भाषा स्थानीय होती है। बिनकारी या खेती पर अंग्रेजी में किताबें लिखी जाती हैं लेकिन जिसे ये काम करना है उसे उपयुक्त स्थानीय भाषा सीखना जरूरी है।
- विश्वविद्यालय और कम्प्यूटर की भाषा अंग्रेजी है।
- भाषा में ही ज्ञान का आदान-प्रदान, संयोजन, सम्प्रेषण आदि होता है। लोकविद्या समाज के साथ अंतरंग होती है इसलिए भाषा के विकास में इसकी स्वाभाविक भूमिका होती है।
- वास्तव में भाषा, सामान्य भाषा, लोकविद्या का ही अंग होती है। साहित्य, कविता आदि में उसी के प्रखर, कलात्मक आदि विशेष रूप होते हैं।
- जिस तरह भाषा के विभिन्न एवं विशेष रूपों में सही गलत क्या है, इसकी कसौटी सामान्य भाषा में होती है, उसी तरह ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र में सही-गलत की कसौटियां लोकविद्या में होती हैं।

6. कला

- लोकविद्या विविध कलाओं का घर होती है।
- लोकविद्या में कला और विज्ञान को अलग-अलग करना, उनके तुलनात्मक महत्त्व को कम या ज्यादा आंकना या सैद्धांतिक स्तर पर उनके बीच ऊंच-नीच कायम करना जैसी बातों को मान्यता नहीं होती।
- लोकविद्या मनुष्य के जीवन को कलात्मक बनाती है।
- आज की व्यवस्था का एक बड़ा आधार लोकविद्या के शोषण में है। लोक कलाओं का शोषण इसी का हिस्सा है।
- लोक नाट्य, लोक संगीत, लोकगीत, लोक साहित्य, लोक शिल्प, लोक चित्र आदि की चोरी बड़े पैमाने पर हो रही है।
- लोकविद्या की पुनर्प्रतिष्ठा का हिस्सा ही है लोक कलाओं को उनका वाजिब मूल्य मिलना।

7. संचार माध्यम

- समाज में संचार माध्यमों की उपस्थिति बहुत बढ़ गयी है।
- जन-संचार माध्यम का अर्थ होता है जन साधारण के लिए प्रसारण जैसे अखबार, रेडियो, टी. वी., सिनेमा आदि। इनके मार्फत लोकविद्या का पक्ष उजागर हो इसकी सम्भावना तब तक नहीं है जब तक वे वित्तीय ताकतों द्वारा नियंत्रित होते हैं। ये वित्तीय ताकतें सरकारी, गैर-सरकारी और निजी सभी किस्म की होती हैं।

- संचार माध्यम लोगों के पक्ष में तभी हो सकते हैं जब वे लोकविद्या की दुनिया में आपस में सम्पर्क, एक-दूसरे से जानकारी, विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम बनें।
- मोबाइल और सामुदायिक रेडियो के रूप में समाज में विस्तार पाने लायक आधुनिक संचार माध्यम अस्तित्व में आये हैं। लोकविद्या की दृष्टि से ऐसी संचार-सम्पर्क व्यवस्थाओं के बारे में सोचते रहना ज़रूरी है जो प्रौद्योगिकी पर कम से कम निर्भर होती हों।
- गांव-गांव में लोकविद्या सम्मत मीडिया स्कूल बनने चाहिये। इससे संचार-सम्पर्क की दुनिया में एक लोकहितकारी परिवर्तन की शुरूआत हो सकती है।

8. प्रौद्योगिकी

- अधिकांश आधुनिक प्रौद्योगिकी प्रकृति और पर्यावरण का नाश करती है। कृषि, उद्योग, परिवहन, संचार व सम्पर्क, सभी क्षेत्रों में यही हुआ है।
- आधुनिक प्रौद्योगिकी ने समाज को यों विभाजित किया कि थोड़े से लोग अमीर हो गये और सत्ता पर काबिज हो गये तथा ज्यादातर लोग गरीब और असहाय बना दिये गये। पहले उत्पादन की प्रौद्योगिकी ने ऐसा किया, अब कम्प्यूटर की प्रौद्योगिकी उसी को बदतर बना रही है।
- जो प्रौद्योगिकी लोकविद्या का अंग नही बन सकती, वह हर हालत में प्रकृति और मानवता की दुश्मन ही होती है। नाभिकीय प्रौद्योगिकी इसका स्पष्ट उदाहरण है। रासायनिक

खाद, इस्पात, सीमेण्ट, हवाई जहाज वगैरह बनाने की प्रौद्योगिकी भी इसी श्रेणी में आती हैं।

- जैसे बहुत बड़ा समस्याजनक है वैसे ही बहुत छोटा और बहुत तेज दोनो ही समस्याजनक हैं। बायो, नैनो और सूचना प्रौद्योगिकी का फैलाव बढ़ता चला जाय तो उसके नतीजे भी बड़े उद्योगों के नतीजों की तरह ही मनुष्य और प्रकृति दोनो के लिये बेहद हानिकारक होने हैं।
- लोकविद्या उद्योग की पहचान यही है कि वह समाज और प्रकृति दोनों में भाईचारे के मूल्य का सम्मान करता है। न प्रकृति और पर्यावरण का नाश करता है और न समाज में ऊंच-नीच पैदा करता है। इन्हीं कसौटियों के दरवाजों से लोकविद्या नये-नये तरीकों, खोजों और प्रौद्योगिकियों का स्वागत करती है।

9. वित्तीय पूंजी

- वित्तीय पूंजी का अर्थ है पैसे से पैसा बनाने का आधार।
- वित्तीय पूंजी में बड़े व्यापार के विस्तार और लोकविद्या के शोषण का आधार है।
- लाखों किसानों और बुनकरों की आत्महत्या इसी वित्तीय पूंजी की व्यवस्था का नतीजा है।
- लोकविद्या जन आन्दोलन वित्तीय पूंजी की व्यवस्थाओं को चुनौती देने का आन्दोलन है।
- लोकविद्याधर समाज में यह शक्ति है कि वित्तीय पूंजी पर आधारित समाज को खत्म कर के एक नये ज्ञान आधारित समाज की रचना करे।

10. अर्थनीति

- वर्तमान अर्थनीति बाहरी नियंत्रणों के मार्फत लोकविद्या के शोषण को अंजाम देती है। वित्तीय संसाधनों से सम्पन्न उद्यमी जो चाहे वो लोकविद्या से ले लेते हैं और वापस कुछ भी नहीं देते।
- इस अर्थनीति में लोकविद्या के बल पर पैदा की गयी वस्तुओं के दाम कृत्रिम तौर पर कम बनाकर रखे जाते हैं।
- लोकविद्या अर्थनीति के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं :
  - प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय समाजों का नियंत्रण।
  - राष्ट्रीय संसाधनों (जैसे बिजली, शिक्षा, वित्त) का गांव और शहर के बीच बराबर का बंटवारा।
  - लोकविद्याधर समाज के उत्पादनों और स्थानीय बाजारों की नीतिगत पक्षधरता।
  - विस्थापन पर पूरी रोक।
  - हर परिवार में एक नौकरी। जिसे जो आता है (लोकविद्या) के बल पर नौकरी।

11. राजनीति

- सभी राजनैतिक व्यवस्थाएं लोकविद्याधर समाज के खिलाफ हैं।
- ग्राम पंचायत और आरक्षण लोकविद्याधर समाज के चुनिन्दा लोगों को इस व्यवस्था में शामिल करते हैं।
- इस राजनैतिक व्यवस्था में जन प्रतिनिधियों के रूप में चुनकर जाने वाले जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि

वित्तीय प्रतिष्ठानों और केन्द्रीय सत्ता द्वारा निर्धारित काम करते हैं।

- सत्ता के केन्द्रीयकरण से मुक्त हुए बगैर न लोकविद्या को बढ़ावा मिल सकता है और न लोकविद्याधर समाज की स्थितियों में सुधार हो सकता है।
- लोकविद्याधर समाज के संगठनों द्वारा दिल्ली को नकारना जरूरी है। इसके लिए उन्हें केन्द्रीय राजनैतिक दलों को नकारना होगा।
- ग्रामसभा, यानि पूरे गांव की आम सभा, यह लोकविद्या राजनीति में सत्ता का स्रोत है। किन्तु केन्द्रीय सत्ताओं को नकारे बगैर यह बात कहना बेमानी है।

12. संस्कृति

- लोक संस्कृति के अलावा कोई संस्कृति नहीं होती।
- पूंजीपति समाज जिसे संस्कृति कहता है, उसमें नखरे, फैशन, औपचारिकताओं और फरेब के अलावा कुछ नहीं होता। अपसंस्कृति इसकी स्वाभाविक परिणति है।
- लोकविद्या को लोक संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता।
- लोकविद्या में सैद्धांतिक समझ, तकनीकी क्षमताओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और व्यवहारों के बीच विभाजन रेखाएं नहीं होतीं।
- लोक संस्कृति पर हमला बाजार के मार्फत होता है।

- वैश्विक बाजार में संस्कृति के लिए कोई जगह नहीं है। तीर्थ स्थानों को पर्यटन के स्थान बनाना इसी का उदाहरण है।
- लोक संस्कृति को सम्मान की बात उसी हद तक की जाती है, जहां तक उससे बाजार का विस्तार होता है और लोककला के शोषण के रास्ते खुलते हैं।
- लोक संस्कृति लोकविद्याधर समाज की शक्ति और रचनात्मकता का स्थान है। भाईचारे में स्थित शक्ति के रूपों के नवनिर्माण को गति यहीं से मिलनी है।

13. धर्म

- धर्म और संस्कृति में अन्तर करना घातक है।
- साम्राज्यवाद ने धर्म को कर्मकाण्ड में बदल दिया है।
- धर्म के ठेकेदार केन्द्रीय सत्ता और वित्तीय प्रतिष्ठानों के पुजारी होते हैं।
- लोकविद्या धर्म किसी अलौकिक शक्ति की मान्यता पर टिका नहीं होता। लोकविद्या की दृष्टि से समाज को ही सबसे बड़ी ताकत की मान्यता है।
- न्यायसंगत सामाजिक मान्यताओं जैसे बराबरी और भाईचारे के विचार तथा ऊंच-नीच और शोषण का विरोध ही कर्त्तव्यों के उस विधान का संदर्भ हो सकते हैं जिसे धर्म कहा जाता है।
- धर्म और राजनीति अलग-अलग रखने का यह अर्थ नहीं है कि धर्म केवल व्यक्तिगत और निजी होता है बल्कि यह

कि धर्म सामाजिक होता है तथा राजनीति से जुड़कर वह समाज को खण्डित करने का काम करता है।

- संगठित धर्म और संगठित विद्या एक-दूसरे को बल देते हैं और लोकधर्म व लोकविद्या के आधारों का अवमूल्यन करते रहते हैं।

14. इतिहास

- जो इतिहासकार लिखते हैं उसे ही इतिहास माना जाता है। लिखित शब्द की इस इजारेदारी में मौखिक परम्पराओं और मान्यताओं को ज्ञान का दर्जा नहीं है।
- लोकविद्या दृष्टि में लोकस्मृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- लोकस्मृति उन बातों को संजोकर रखती है जो व्यापक अर्थों में लोकहित की साधक हो सकती है।
- इतिहास अतीत के सत्य की खोज के नाम पर एक मिथ्या जगत के निर्माण का सहारा बनता है।
- लोकस्मृति परिवर्तनशील होती है। हर काल में लोग अपने अनुभवों, अपनी जरूरतों एवं अपनी तर्कबुद्धि के जरिये इस स्मृति का नवीनीकरण एवं समकालीनीकरण करते रहते हैं। इसी के चलते लोकस्मृति को नये मुहावरे मिलते रहते हैं।
- इतिहास पर चल रही बहस असली और नकली दोनों है। असली उन लोगों के लिए है, जिन्हें समाज में चल रहे शोषण और अन्याय से कोई मतलब नहीं है तथा वर्तमान समाज में ही अपनी आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक सत्ता

को बढ़ाना है। नकली उन लोगों के लिए है जिन्हें वर्तमान समाज के अन्दर सत्ता पर कब्जे की लड़ाइयों से कुछ मिलना तो नहीं ही है बल्कि उनके चलते और पिसना ही है।

- इतिहास के वर्णनों में मनुष्य की रचना, क्रियाशीलता और मुक्ति की उड़ानों का चित्रण नहीं हो सकता। इसके लिए विद्या की जीवंत अभिव्यक्तियों के लोकप्रिय रूपकों का सहारा चाहिए। यह लोकविद्या में ही सम्भव है।

15. परम्परा

- परम्परा के सार्वजनिक विचार पर धर्म के ठेकेदारों का कब्जा है। वे परम्परा की एक सर्वथा मिथ्या व्याख्या के जरिये लोकविद्या को पूंजीवादी समाज की सेवा में लगाने के उपाय करते रहते हैं।
- पश्चिम के दर्शन और विकास से प्रभावित तथाकथित प्रगतिशील लोगों को परम्परा में केवल नकारात्मक बातें ही दिखायी देती हैं।
- जो लोग ज्यादा पढ़-लिख गये हैं और सामुदायिक जीवन से अलग हो गये हैं वे इतिहास के पन्नों में परम्परा खोजते हैं, जबकि परम्परा एक जीवंत व समकालीन अनुभूति व अभिव्यक्ति है।
- परम्परा वही है जो पहले से चली आ रही है और आज भी जीवंत है। उसे लोकजीवन में ही देखा जा सकता है। लोकविद्या और लोकस्मृति ही उसके परिचायक हो सकते हैं।

- लोकविद्या में परम्परा संजोई होती है। उसे इतिहास की पुस्तकों में खोजना विश्वविद्यालयीय विद्या की मजबूरी है और सत्ता की राजनीति करने वालों का एक औजार।
- परम्परा का अर्थ ठीक से समझने व उसे समाज की विद्या और वास्तविक गति में पहचानने से ही उस परिवर्तन के रास्ते खुलते हैं जिसकी कल्पना में समाज परिवर्तन के कार्यकर्ता काम करते हैं। क्या गांधीजी ने यही नहीं किया था?

16. समाज

- हमारे विरोधी कहते हैं कि लोकविद्या को बढ़ावा देने से समाज में फिर से जातियों का महत्त्व बढ़ जायेगा। लेकिन यह सरासर गलत है। वे लोकविद्या का अर्थ नहीं समझते, उसे विलुप्त हो रहे ज्ञान और हुनर के बचे-खुचे अंशों के रूप में देखते हैं। शायद उनका दोष नहीं है। आधुनिक शिक्षा ने हमें यही सिखाया है।
- यह हम नहीं जानते कि क्या लोकविद्या कभी जातियों में उतनी ही बंधी थी जितना आधुनिक ज्ञान विश्वविद्यालयों में बंधा है, लेकिन यह जरूर दिखाई देता है कि लोकविद्या को बढ़ावा देने का एक नतीजा यह अवश्य निकलेगा कि वह अपनी सामाजिक सीमाओं को लांघेगी।
- लोकविद्याधर समाज का कोई भी संघर्षशील संगठन जाति, गांव या परिवार की सीमाओं को ऐसी मान्यता नहीं देता जो लोकविद्या को बांधे।

- पिछले 200 वर्षों में साम्राज्यवाद और विश्वविद्यालय के विस्तार ने लोकविद्या को संकुचित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अब जब लोकविद्या एक आत्मविश्वास और अपनी पहल के आधार पर आगे बढ़ना चाहती है तो उसे कोई सामाजिक व्यवस्थाएं अथवा ताकतें बांध नहीं पायेंगी। वास्तव में लोकविद्याधर समाज के बढ़ते कदमों में ही सामाजिक बंधनों को तोड़ने की क्षमता है, उन जातिवादी बंधनों को भी जिन्हें आज की व्यवस्था बढ़ावा देती है।

17. लोकहित

- लोकहित की परिभाषा उच्च शिक्षित लोग करते हैं, राजनेता और पूंजीपति करते हैं। यानि लोकहित क्या है यह वे लोग तय करते हैं जो खुद को लोक में नहीं मानते।
- लोग क्या चाहते हैं यह बात नहीं की जाती, लोगों के लिए क्या अच्छा है इसकी बात की जाती है।
- वोट देने का तंत्र यह मानता है कि हर वयस्क अपना अच्छा-बुरा समझता है, लेकिन जब नीतियां बनती हैं तब इस मान्यता को खारिज कर दिया जाता है। उनके लिए क्या अच्छा है यह और लोग तय करते हैं।
- लोकविद्या का दृष्टिकोण एकदम अलग है। समाज में लोकहित की कसौटी को आकार दे पाने की क्षमता केवल लोकविद्या में होती है। वास्तव में लोकहितकारी विचार लोकविद्या के अंग ही होते हैं।

- कोई भी बात, व्यवहार, क्रिया, तकनीक अथवा नीति लोकहित में है तथा अपनाने योग्य है, यह निर्णय लेने की क्षमता लोकविद्या दृष्टि में ही होती है।
- जिसके हित की बात हो रही है उसी की ज्ञान की दुनिया को नकार कर यह बात की जाये, इसमें अद्‌भुत आंतरिक अंतर्विरोध है।
- लोकहित की पूर्ण परिभाषा कर पाने की क्षमता से लोकविद्या दृष्टि एक विश्वदृष्टि का रूप लेती है।

18. सामान्य जीवन

- सामान्य जीवन लोकविद्या का घर है। दोनों के बीच अंतरंग सकारात्मक रिश्ता है।
- लोकविद्या से सामान्य जीवन में निखार आता है और लोकविद्या का विकास सामान्य जीवन के मूल्यों के अनुरूप होता है।
- लोकविद्या का आधारभूत मूल्य सामान्य जीवन ही है। सादगी भरा जीवन नहीं, सरल जीवन भी नहीं, सिर्फ सामान्य जीवन। इसीलिए लोकविद्या कभी नहीं मरती, क्योंकि सामान्य जीवन कभी नहीं मरता।
- सामान्य जीवन की कोई शर्त नहीं होती। यह किसी से बंधा नहीं होता। यह ज्ञान के संचार व संगठन के किन्हीं तरीकों, धर्म, साइंस या प्रौद्योगिकी पर निर्भर नहीं होता। सामान्य जीवन कोई हमेशा सत्य, नैतिक अथवा सादगीपूर्ण नहीं होता। उसमें झूठ, खर्चीलापन और अनैतिक व्यवहार

भी होता है। लेकिन उसमें सत्य, नैतिकता, न्याय और विवेक इत्यादि की कसौटियां होती हैं, जिनका संदर्भ सतत् प्रभावी होता है।

19. प्रकृति

- आधुनिक विकास के दौर में प्रकृति का अद्‌भुत विनाश हुआ है। जल, जंगल, जमीन, पहाड़, वायुमण्डल सभी कुछ एक जबर्दस्त टूट और क्षय का शिकार हुआ है।
- मनुष्य की हर गतिविधि उसके ज्ञान के आधार पर ही होती है। तो यह माना जाय कि आधुनिक ज्ञान यानि विश्वविद्यालय में पढ़ने व पढ़ाये जाने वाले ज्ञान में प्रकृति की कोई समझ ही नहीं है। उनके ज्ञान के सारे दावे खोखले हैं तथा सत्ता और पूंजी के साथ साझेदारी के बल पर अपना दब-दबा बनाये हुए हैं।
- प्रकृति को बचाने का एकमात्र रास्ता लोकविद्या की प्रतिष्ठा में है, लोकविद्या के बल पर समाज और प्रकृति के बीच के रिश्ते को संचालित करने में हैं।
- लोकविद्या ज्ञान की दुनिया में प्रकृति का प्रतिरूप है। किसान, कारीगर, आदिवासी, ये सभी प्राकृतिक संसाधनों का सतत् इस्तेमाल करते हैं तथा उनके जीवन के मूल्य इस इस्तेमाल का दायरा और प्रकार यों निश्चित करते हैं कि प्रकृति और उसकी व्यवस्थाओं पर कोई स्थाई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता।

- दक्षिण अमेरिका के देशों में प्रकृति और धरती मां के अधिकारों की बात बड़े पैमाने पर उठायी जा रही है। भारत की पूरी परम्परा प्रकृति के साथ मिलजुल कर जीने की परम्परा है। अब जरूरत है तो उस लोकविद्या राजनीति की जो विश्वविद्यालय के ज्ञान और मनुष्य के लालच को अपने वरीयता क्रम के सबसे निचले पायदान पर ढकेल दे।

20. साइंस

- साइंस में आधुनिक ज्ञान की आधारशिला है। साइंस ज्ञान के एकांगी रूप के चरम पर है। जब किसी घटना, व्यवस्था या प्रक्रिया को समझने का प्रयास साइंस में किया जाता है तो यह मान कर किया जाता है जैसे दुनिया की और सारी बातों का उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं है।
- साइंस नीति निरपेक्ष होता है। अच्छे-बुरे के विचारों, मानव हित के प्रश्नों से वह अपना कोई सम्बन्ध नहीं देखता। थोड़ा विचार करें तो इस नीति निरपेक्षता की भयावहता समझ में आ जायेगी। यह राक्षस से भी खतरनाक है। इसके लिए शब्दकोश में शब्द नहीं मिलेंगे। जो मानव मूल्यों को पहचानता ही नहीं उससे बात कैसे हो? वह एक मशीन की तरह है जो अपने ढंग से चलती रहती है और जिसे दिशा देने या नियंत्रित करने में मानवीय मूल्यों की कोई भूमिका न हो।
- पिछले कुछ सौ वर्षों के नितांत व्यावसायिक विकास की यह देन है, जिससे मुक्ति का रास्ता केवल लोकविद्या की प्रतिष्ठा में ही हो सकता है।

21. इंटरनेट

- यह एकदम नयी चीज है; अब 20 साल पुरानी। कम्प्यूटर और संचार प्रौद्योगिकी ने मिलकर इसे बनाया। इसे सम्पर्क प्रौद्योगिकी कहा जा सकता है।
- इंटरनेट के चलते ज्ञान के प्रबंधन का एक नया विचार और व्यवहार अस्तित्व में आया है। इसमें दुनियाभर की किसी भी जानकारी को पकड़कर किसी भी दूसरी जानकारी से जोड़ने की क्षमता है।
- बाजार, वित्तीय संसाधन, मीडिया और राजसत्ता, सभी में इंटरनेट ने एक सर्वथा नया परिवर्तन ला दिया है। सत्ताधारी वर्गों की संरचना में बदलाव हो रहा है। नयी सत्ता वैश्विक है जिसके शीर्ष पर अभी अमेरिका बैठा हुआ है।
- इंटरनेट ने लोकविद्या की लूट के नये पैमाने गढ़ने शुरू कर दिये हैं और इस प्रक्रिया में लोकविद्या बहस के केन्द्र में आ रही है। अब यह सम्भावना भी प्रकट हुई है कि एक ऐसी लोकविद्या राजनीति अस्तित्व में आये जो दुनियाभर में पसरे और पूंजी के साम्राज्य को उलटकर लोकविद्या पर आधारित समाज बनाने की ओर आगे बढ़े।
- क्या लोकविद्याधर समाज के नेतृत्व इस ऐतिहासिक मौके को पहचानेंगे और इस चुनौती को स्वीकार करेंगे?

22. वैश्वीकरण

- वैश्वीकरण के गम्भीर नतीजों से सभी परिचित हैं। किसान, कारीगर, आदिवासी और छोटा दुकानदार सभी उजाड़ और शोषण की नयी जंजीरों से बांधे जा रहे हैं।
- पूंजी की सत्ता के सामने सरकारों ने हाथ खड़े कर दिये हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनियां खुद शासन का रूप ले रही हैं।
- पैसे वाले देश अपने को आर्थिक संकटों से उबारने के लिए युद्ध पर युद्ध करते चले जा रहे हैं।
- इस सबके खिलाफ खड़े होने की ताकत केवल लोकविद्याधर समाज में ही है। यह वही समाज है जिसकी आध्यात्मिक ताकत ने गांधी को जन्म दिया।
- लोकविद्या का दृष्टिकोण ही 21वीं सदी का गांधी का दृष्टिकोण है। यही वैश्वीकरण को चुनौती का दृष्टिकोण है।

23. दर्शन

- लोकविद्या का दर्शन संत परम्परा का दर्शन है। यह सत्य के निर्माण और पुनर्निर्माण का दर्शन है।
- यह अपने समय की आततायी ताकतों से असहयोग का दर्शन है।
- यह व्यक्ति को समाज के रूप में देखने और समाज को व्यक्ति के रूप में देखने का दर्शन है।
- यह मनुष्य को लालची और स्वार्थी प्राणी के रूप में नहीं देखता बल्कि सत्य और अहिंसा में मौलिक आस्था के जीव के रूप में देखता है।

- लोकविद्या से सभी ज्ञान शुरू होता है और उसी में लौटकर वापस आता है। जो ज्ञान लोकविद्या में वापस नहीं आता है वह समाज और प्रकृति का दुश्मन होता है।

24. परिवर्तन

- परिवर्तन प्रकृति का नियम है। दुनियाभर में परिवर्तन के लिए संघर्ष चल रहे हैं। अपने देश में किसानों और आदिवासियों के विस्थापन विरोधी संघर्ष और माओवादियों के उग्र संघर्ष, इस्लामी दुनिया के अमेरिका की साम्राज्य नीति के खिलाफ उग्र संघर्ष, अरब दुनिया में आततायी ताकतों के विरुद्ध जन-संघर्ष, दक्षिणी अमेरिका में जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में प्रकृति और धरती मां के अधिकार के संघर्ष, अमेरिका में वित्तीय पूंजी की खिलाफत के जन-संघर्ष, इंग्लैण्ड में उपभोक्ताओं और छात्रों के संघर्ष, यूरोप में वर्तमान शिक्षा के व्यवसायीकरण के खिलाफ और विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण के छात्र-संघर्ष, ये सभी परिवर्तन के एक नये दौर के बारे में कह रहे दिखायी देते हैं।
- ये सब परिवर्तन के संघर्ष किसी एक विचारधारा में बंधे नहीं हैं। इनमें से कई वित्तीय संरचना, विश्वविद्यालय, प्रगति की अवधारणा और पश्चिम द्वारा लादे जा रहे युद्धों पर बुनियादी सवाल उठा रहे हैं। पिछले 200 वर्षों में पश्चिम में पैदा हुए किसी भी विचार में इनके जवाब नहीं है।

- इस विश्वव्यापी परिवर्तन के दौर की यह मांग मालूम पड़ती है कि वित्तीय दबदबे, सूचना प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और युद्धों से मुकाबले के लिए गांधी के विचार से दिशा हासिल की जाये।
- गांधी के विचारों को जब ज्ञान की भाषा में रूपान्तरित किया जाता है तब लोकविद्या विचार ही सामने आता है। यही इस युग की परिवर्तन की भाषा है।

25. अंत में

- लोकविद्याधर समाज की एकता में व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर हैं।
- लोकविद्या जन आन्दोलन इस एकता के विचार का पहला नतीजा है और लोकविद्याधर समाज का ज्ञान आन्दोलन उसकी एकता बनाने का एक सशक्त माध्यम है।

•

निमंत्रण / घोषणा

लोकविद्या जन आन्दोलन

पहला अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन : 12–14 नवम्बर 2011, वाराणसी

विद्या आश्रम आपको 12–14 नवम्बर, 2011 के बीच होने वाले लोकविद्या जन आन्दोलन के पहले अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने के लिए आंमत्रित करता है। यह अधिवेशन वाराणसी में विद्या आश्रम के सारनाथ परिसर में होगा।

जन आन्दोलन और ज्ञान का दृष्टिकोण

विस्थापन आज भारत में सामाजिक आन्दोलनों का सबसे बडा सरोकार बन गया है। यह विस्थापन जमीन, घर, रोजगार, संसाधन और बाजार सभी से हो रहा है। किसानों के आन्दोलन प्रमुख रूप से कृषि उत्पादन का दाम हासिल करने के लिए, कर्ज और बिजली के लिए तथा जबर्दस्ती किये जा रहे भूमि अधिग्रहण के खिलाफ होते रहे हैं। आदिवासियों और स्थानीय समाजों के आंदोलन घर, जमीन और जंगल से बेदखली तथा पर्यावरणीय विनाश के खिलाफ चलते रहे हैं। शहरी गरीबों और झोपड़पट्टियों में रहने वालों के संघर्ष हमेशा ही विस्थापन के विरोध में और सामान्य नागरिक व सामाजिक अधिकारों को हासिल करने के लिए होते रहे हैं। वैश्विक बाजार और बड़ी पूँजी की घुसपैठ द्वारा स्थानीय बाजार को तहस–नहस करने के खिलाफ कारीगर और ठेले–गुमटी पर धंधा करने वाले बड़े पैमाने पर लामबंद होते रहे हैं। ये सभी आंदोलन कुछ समय से विस्थापन के विरोध के एक व्यापक आन्दोलन का रूप ले रहे हैं। एक तरफ शासन और प्रशासन की नई व्यवस्थायें इस प्रतिरोध को बड़े पैमाने पर दबाने में लगी हुई हैं, तो दूसरी तरफ लोगों के साथ खड़े सामाजिक कार्यकर्ता एक नई जन एकता को आकार देने के रास्ते खोज रहे हैं।

ये सब विस्थापन के शिकार लोग और समाज ऐसे हैं जो कभी कालेज नहीं गये हैं और अपनी जिंदगी लोकविद्या के बल पर चलाते हैं। लोकविद्या उनका अपना वह ज्ञान है जो उन्होंने विरासत में प्राप्त किया है; काम के स्थान पर, समाज में और सहकर्मियों से सीखा है और जिसको उन्होंने अपनी जरूरत, अनुभव और प्रयोगों के बल पर अपनी तर्क बुद्धि से प्रभावी और

समसामयिक बनाया है। विस्थापन उनकी जिंदगी की चौखट में ऐसे बदलाव ले आता है जिनके चलते वे लोकविद्या, यानि अपने ज्ञान के इस्तेमाल से वंचित हो जाते हैं और बाजार में एक सस्ते मजदूर के रूप में खड़े कर दिये जाते हैं। लोकविद्याधर समाज का लोकविद्या से रिश्ता टूटने की इस प्रक्रिया का हर हालत में मुकाबला करना ज़रूरी है। वास्तव में लोकविद्या, यानि लोगों का सोचने का तरीका, उनके मूल्य, उनका संगठन का तरीका, उनका हुनर, ज्ञान, सौन्दर्य बोध और नैतिक संवेदनायें, कुल मिलाकर उनकी ज्ञान की दुनिया ही उनकी शक्ति का प्रमुख स्रोत है। भारत में और सारी दुनिया में फैले किसानों, आदिवासियों, कारीगरों, छोटा–छोटा धंधा करने वालों और विविध स्थानीय समाजों के बीच यदि कुछ समान है, तो वह लोकविद्या ही है। यही इन सबके बीच एकता की कड़ी है। यह समझना जरूरी है कि आज मुक्ति का रास्ता ज्ञान की दुनिया से होकर गुजरता है। लोकविद्या दृष्टिकोण सूचना युग का जनता का दृष्टिकोण है।

लोकविद्या का दावा

दुनिया भर में किसान और आदिवासी एक नया दावा पेश कर रहे हैं। अपनी–अपनी भाषा में और अपने–अपने तरीकों से वे यह कह रहे हैं कि अपने ज्ञान, मूल्यों और विश्वासों के साथ जीना और वह सब ज्ञान प्राप्त करना जो वे चाहते हैं, ये उनके जन्म सिद्ध अधिकार हैं। इन्हें उनसे छीना नहीं जा सकता। एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में नये किस्म की हलचल दिखाई दे रही है, जिसमें पूरी दुनिया के शोषित, उत्पीड़ित एवं विस्थापित लोगों की एक नई एकता के संकेत हैं। इस बार इस एकता का आधार लोकविद्या में होना है यानि उनके इर्द–गिर्द के समाजों और प्रकृति की उनकी समझ में जो समान है, उसमें होना है।

इसका यह अर्थ है कि किसानों और आदिवासियों, कारीगरों और महिलाओं तथा छोटा–छोटा धंधा करने वालों और मज़दूरों को लोकविद्या का दावा पेश करना चाहिए। यह कोई जीविकोपार्जन की ज़रूरत भर का दावा नही है, यह एक नई दुनिया बनाने का दावा है। उन्हें यह दावा पेश करना है कि पूँजी और ज्ञान के व्यवसायीकरण को केवल लोकविद्या ही बुनियादी चुनौती दे सकती है। उन्हें यह दावा भी पेश करना है कि सत्य व सामाजिक और आर्थिक बराबरी के समाज का ज्ञान का आधार केवल लोकविद्या में है।

हमें यह समझना होगा कि जब तक ये दावे पेश नहीं किये जाते, तब तक हम बुनियादी सामाजिक परिवर्तन के अपने असरहीन पूर्वाग्रहों में फँसे रहेंगे। ऐसा लोकविद्या–ज्ञान का दावा हमारे विचारों और कार्यों में एक नई और वास्तविक उड़ान भर दे सकता है, जो आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कषतिक सभी क्षेत्रों में नई सोच को जन्म दे। ऐसे दावों को आकार देने की प्रक्रिया ही लोकविद्या जन आंदोलन है।

लोकविद्या जन आन्दोलन (लो.ज.आ.)

वैश्विक आर्थिक और पर्यावरणीय संकट ने उन विचारों और संस्थाओं को बेनकाब कर दिया है, जिन्होंने बड़े पैमाने पर लोगों को भूखा मारकर और प्रकषति का विनाश करके चंद लोगों की जेबें भरी हैं। लोकविद्या जन आन्दोलन इसी बहुमत जनता का ज्ञान आन्दोलन है, यानि उन लोगों का ज्ञान आंदोलन है, जिन्हें पूँजी के प्रतिष्ठानों, विश्वविद्यालयों और राज्य की व्यवस्थाओं ने अज्ञानी घोषित कर रखा है। ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि विश्वविद्यालयों के बाहर ज्ञान का सागर है। समाज में ज्ञान का विस्तष्त फैलाव है, ऐसा मानने वालों की कोई कमी नही है। यानि लोगों के पास ज्ञान है और उस ज्ञान की अनुभूति भी। और फिर भी न उन लोगों को और न उनके ज्ञान को ही समाज में सम्मान है। उनके ज्ञान के बल पर अच्छी आय नही हो सकती, इसलिए लोग गरीब हैं। सार्वजनिक दुनिया में उनके ज्ञान को सम्मान नही है, इसलिए उनके मूल्य और संस्कषति हाशिये पर पड़े रहते हैं। उनके ज्ञान का जन संगठनों के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उनका कोई राजनैतिक महत्व नहीं है। एक ऐसे राजनैतिक आंदोलन की ज़रूरत है, जिसमें लोग अपने ज्ञान के आधार पर गति पैदा करते हैं। लोकविद्या जन आंदोलन एक ऐसा ही आंदोलन है। प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, छोटा–छोटा धंधा करने वालों, महिलाओं और नौजवानों के आंदोलनों को एक ज्ञान के मंच पर इकट्ठा करने का प्रयास है। यह उनके ज्ञान का मंच है, लोकविद्या का मंच है। ऐसे ही मंच से यह दावा किया जा सकता है कि लोकविद्या में ही समाधान है।

दुनिया में हो रहे और ज्ञान आन्दोलन

दुनिया में कई जगह नये किस्म के आन्दोलन शुरू हुए हैं, ऐसे आन्दोलन जिनमें एक सर्वथा नई राजनैतिक सोच दिखाई देती है और जिन्हें

लोकविद्या जन आन्दोलन कहा जा सकता है। भारत में 'लोकविद्या' का अभियान, बोलिविया से शुरू हुआ 'धरती माँ के अधिकार' का आन्दोलन, इक्वाडोर में 'प्रकृति के अधिकार' का विचार, वाया कम्पेसिना नाम के अंतर्राष्ट्रीय किसान संगठन का 'खाद्य सम्प्रभुता' का विचार व अभियान तथा यूरोप व अमेरिका में छात्र आन्दोलन में आकार ले रहे 'ज्ञान के पूँजीवाद' और 'ज्ञान मुक्ति' के विचार एक नई राजनीतिक बहस को जन्म दे रहे हैं। इन सभी में यह आग्रह है कि लोगों के पास ज्ञान होता है और लोकविद्या साइंस के नाम पर प्रसारित ज्ञान से किसी भी अर्थ में कम नहीं है। समझ यह है कि पिछली सदियों में जनता पर और प्रकृति पर जो कहर ढाया गया है और जो इस सूचना युग के नये साम्राज्य में कई गुना बढ़ गया है, उसे वही लोग ठीक कर सकते हैं, जो आधुनिक ज्ञान की व्यवस्थाओं में समा नही गये हैं।

लोकविद्या जन आंदोलन यह दावा पेश करता है कि दुनिया भर में हो रहे ऐसे ज्ञान आंदोलन, संघर्षों का एक नया बिरादराना बना रहे हैं, लोगों का एक विश्वव्यापी ज्ञान आन्दोलन खड़ा कर रहे हैं।

कार्यक्रम

तीन दिवसीय अधिवेशन के पहले दो दिन निम्नलिखित पर चर्चा होगी–

- लोकविद्या और लोकविद्या जन आन्दोलन का विचार
- संघर्ष, जो इन विचारों को प्रेरित करते हैं और उनके लिए जगह बनाते हैं
- लोकविद्या जन आन्दोलन का संगठन और आगे के लिए विचार।

14 नवम्बर को लोकविद्या जन आंदोलन में भाषा, कला, संचार माध्यम और दर्शन की भूमिका और स्थान पर चर्चा होगी। वे लोग, जो लोकविद्या विचार के साथ काम नही करते हैं, उन्हें भी लोगों के ज्ञान आंदोलन पर अपने विचार रखने का समय मिलेगा।

•

लोकविद्या से सम्बन्धित प्रकाशन

1998 – 2011

वैश्वीकरण और सूचना के युग में समाज में बराबरी, न्याय और भाईचारे के लक्ष्य प्राप्त करने का सैद्धांतिक और व्यावहारिक आधार लोकविद्या विचार में तथा लोकविद्याधर समाज की व्यापक एकता में है। लोकविद्या से अनुप्राणित आन्दोलन में ही प्रकृति से तालमेल स्थापित करने की क्षमता हो सकती है।

लोकविद्या विचार कई प्रकाशनों के मार्फत सामने लाया गया है। अभी तक के प्रकाशनों की सूची नीचे दी जा रही है। विद्या आश्रम से इन्हें प्राप्त किया जा सकता है।

हिन्दी

- लोकविद्या विचार (पुस्तक)
- रामअधार गिरि : लोकहित के प्रहरी (पुस्तक)
- लोकविद्या संवाद पत्रिका के अंक
  - कारीगर अंक
  - किसान अंक
  - नारी अंक
  - स्थानीय बाजार अंक
  - सूचना युग में समाज में ज्ञान पर वार्ता अंक
  - साहित्य विद्या अंक
- लोकविद्या पंचायत पत्रिका (वर्तमान प्रकाशन)
- ज्ञान की राजनीति पुस्तकमाला
  - बौद्धिक सत्याग्रह
  - लोगों के हित की राजनीति और ज्ञान का सवाल
  - ज्ञान मुक्ति आवाहन
  - युवा ज्ञान शिविर
  - लोकविद्या

- लोकविद्या जन आन्दोलन पुस्तकमाला
  - विस्थापन रोको
  - बाजार मोड़ो – लोकविद्या बाजार बनाओ
  - बौद्धिक सत्याग्रह (दूसरा संस्करण)
  - स्मारिका : लोकविद्या जन आन्दोलन प्रथम अधिवेशन 2011

अंग्रेजी

Books :

- Gandhi's Challenge to Modern Science
- Lokavidya, Internet and the Future of the University

Bulletins : Dialogues on Knowledge in Society

– Knowledge in Society
– Virtuality and Knowledge in Society
– Knowledge Satyagraha
– Radical Politics and the Knowledge Question

विद्या आश्रम की वेबसाइट www.vidyaashram.org पर आश्रम के सदस्यों के कई महत्वपूर्ण लेख उपलब्ध हैं। ऊपर दिये गये लगभग सभी प्रकाशन भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

•

लोकविद्या जन आन्दोलन क्या है?

सूचना क्रांति, वैश्वीकरण और ज्ञान के शोषण की नयी व्यवस्थाओं ने लोकविद्या के आधार पर एक क्रांति के विचार को गढ़ने और उसे साकार करने के मौके तैयार किये हैं। लोकविद्या जन आन्दोलन इसी क्रांति का वाहक है।

सब जानते हैं कि किसान, कारीगर, आदिवासी, महिलाएँ और सभी छोटा-छोटा दुकानदारी, सेवा, मरम्मत अथवा निर्माण काम करने वाले अपने-अपने कामों के ज्ञानी होते हैं तथा भाईचारे और बराबरी की दुनिया की चाहत रखते हैं। उन्हीं के ज्ञान को लोकविद्या कहते हैं और उन्हें लोकविद्याधर समाज।

लोकविद्या जन आन्दोलन के जरिये लोकविद्याधर समाज अपने ज्ञान की प्रतिष्ठा कायम करके उस क्रांति को अमली जामा पहना सकता है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को हमेशा के लिए खत्म कर दे और सामान्य द्वारा विशेष की सेवा की स्थितियों को बदलकर विशेष द्वारा सामान्य की सेवा की दुनिया बनाकर दिखा दे।